NATIONAL SEMINAR REPORT

Of

75 years of India's Foreign Policy: Achievements and Possibilities

12th & 13th November, 2022

Sponsored by

I.C.W.A., New Delhi

Organized by

Department of Defence and Strategic Studies

D.A-V. College, Kanpur

(Affiliated with Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, Uttar Pradesh)

Patron : **Kumkum Swarup,**
Secretary Board of Management,
D.A-V. College, Kanpur

Principal & Convenor : Prof. Arun Kumar Dixit,
D.A-V. College, Kanpur

Organizing Secretary : Prof. Sandhya Singh,
Dept. of Defence & Strategic Studies,
D.A-V. College, Kanpur

राष्ट्रीय संगोष्ठी आख्या

इण्डियन काउंसिल आफ वर्ड अफेयर्स, नई दिल्ली

द्वारा वित पोषित

रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, डी. ए–वी. कालेज, कानपुर

द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

12–13 नवंबर, 2022

शीर्षक :– "भारतीय विदेश नीति के 75 वर्ष : उपलब्धियां एवं सम्भावनाएं"

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष की पावन बेला में दिनांक 12–13 नवंबर, 2022 को रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, डी.ए–वी कॉलेज, कानपुर के सभागार में आई.सी.डब्ल्यू.ए. नई दिल्ली के सहयोग से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शीर्षक ''भारतीय विदेश नीति के 75 वर्ष : उपलब्धियां एवं संभावनाएं'' का उद्घाटन सत्र प्रातः 10:00 बजे से प्रारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र का संचालन प्रोफेसर साधना सिंह द्वारा किया गया। चेयर पर्सन के रूप में श्रीमती कुमकुम स्वरूप, सचिव, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट, डी.ए–वी. कॉलेज, कानपुर, मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती नीलिमा कटियार, पूर्व राज्य उच्च शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, मुख्य वक्ता के रूप में एंबेसडर जे.के. त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि के रूप में एंबेसडर अचल कुमार मल्होत्रा, एंबेसडर अनिल कुमार त्रिगुणायत एवं उत्तर प्रदेश राज्य उच्च शिक्षा परिषद् के वाइस चेयरमैन डॉ. मुकुल चतुर्वेदी, संगोष्ठी के समन्वयक एवं प्राचार्य डी.ए–वी. कॉलेज प्रोफेसर अरुण कुमार दीक्षित के साथ इस राष्ट्रीय सेमिनार की आयोजन सचिव प्रोफेसर संध्या सिंह मंचासीन हुए। कार्यक्रम की शुरुआत माननीय अतिथियों द्वारा सरस्वती जी के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। सरस्वती वंदना की प्रस्तुति डॉ. श्रुति श्रीवास्तव द्वारा की गई, तत्पश्चात् अतिथियों का स्वागत उद्बोधन प्रोफेसर अरुण कुमार दीक्षित प्राचार्य डी.ए–वी. कॉलेज द्वारा किया गया। इसके उपरान्त संगोष्ठी से संबंधित संपादित पुस्तक "भारतीय विदेश नीति के 75 वर्ष : उपलब्धियां एवं सम्भावनाए" का विमोचन किया गया। आयोजन सचिव प्रोफेसर संध्या सिंह द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी, जिसमें उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के बाद शीत युद्ध में गुटनिरपेक्ष नीति का पालन, विश्व बंधुत्व और मोदी जी की विदेश नीति के बारे में संक्षेप में बताया। कीनोट ऐड्रेस एंबेसडर जे.के. त्रिपाठी द्वारा दिया गया। जिसमें उन्होंने बताया कि भारत अभी युवावस्था में है विदेश नीति राष्ट्रीय हित का प्रतिनिधित्व करती है प्राचीन काल से ही भारत अपने विदेश नीति के उपकरणों में थोड़ा बहुत बदलाव होता रहा

है। वर्तमान में चीन भारत से इसलिए डरा है क्योंकि भारत ही उसका प्रमुख प्रतिस्पर्धी है। आज के दौर में भारत सैनिक–आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाने की ओर अग्रसर है। मुख्य अतिथि नीलिमा कटियार द्वारा अपने उद्‌बोधन में बताया गया कि आज भारत एक विकसित देश की तरह व्यवहार कर रहा है, भारत हर प्रकार चुनौतियों से निपटने हुए आगे बढ़ रहा है, भारत रक्षा के क्षेत्र में तेजी से उभर कर निर्यात कर रहा है, भारत वसुधैव कुटुंबकम की ओर आगे बढ़ रहा है, आज भारत सर्जिकल स्ट्राइक बिना किसी दबाव के कर रहा है और पूरा विश्व भारत की सुन रहा है। सचिव, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट, श्रीमती कुमकुम स्वरूप ने अपने आर्शीवचन व आशीर्वाद प्रदान करते हुए बताया कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण भारत विश्व के कई देशों को मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है और उन्हें शांति और विकास के मार्ग पर चलने का पाठ पढ़ा रहा है। अंत में संगोष्ठी के समन्वयक एवं प्राचार्य प्रोफेसर अरुण कुमार दीक्षित द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रथम तकनीकी सत्र

प्रथम तकनीकी सत्र का शुरूआत मंच संचालक डॉ. वी.के. दुबे द्वारा मंचासीन अतिथियों का स्वागत उद्‌बोधन द्वारा की गयी। तत्पश्चात् इस सत्र की शुरुआत एंबेसडर अनिल कुमार त्रिगुणायत, के अध्यक्षता में की गई जिसमें उन्होंने भारत के अन्य देशों के साथ बने एतिहासिक संबंधों के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया कि भारत चीन युद्ध की चर्चा की तथा भारतीय पक्ष की कमियों को उजागर किया, साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि वर्तमान भारत सैनिक एवं आर्थिक क्षेत्र में कई देशों की अगुवानी कर रहा है। प्रमुख वक्ता मेजर जनरल (डॉ.) अशोक कुमार (वी.एस.एम.) द्वारा बताया गया कि भारत मे प्राचीन काल से ही युद्ध के बाद ही शांति की स्थापना हुई है और शक्ति के बिना शांति स्थापित नहीं की जा

सकती। दूसरे मुख्य वक्ता प्रोफेसर आई.जे. सिंह चहल, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा अपना व्याख्यान में बताया कि भारत ने रक्षा और आर्थिक मोर्चो पर विदेशों से अपने सम्बन्ध अत्यधिक मजबूत कर लिया है। विभिन्न राज्य के विश्वविद्यालयों से आये एकेडमिशियन्स, शोध छात्रो तथा छात्रों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस तकनीकी सत्र में लगभग 08 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

द्वितीय तकनीकी सत्र

द्वितीय तकनीकी सत्र की शुरुआत मंच संचालक डॉ दिवाकर पटेल द्वारा मंचासीन अतिथियों का स्वागत उद्‌बोधन द्वारा की गई। इस सत्र के अध्यक्ष एंबेसडर अचल कुमार मल्होत्रा, मुख्य वक्ता के रूप में मेजर जनरल (डॉ) अशोक कुमार व प्रोफेसर एस. के. मिश्रा उपस्थित थे। सत्र के अध्यक्ष एंबेसडर अचल कुमार मल्होत्रा ने भारत की विदेश नीति के बारे में बताया कि यह पल्लवित एवं पुष्पित हुई है और आज तेजी से विकसित हो रही है। वर्तमान में भारत गुटों से दूर रहकर पार्टनरशिप पर फोकस कर रहा है। भारत ने कभी भी अपने निर्णयों को दूसरे देशों पर नहीं थोपा है तथा भारत ने कभी भी किसी देश पर प्रतिबंध नहीं लगाए हैं, भारत केवल यू.एन.ओ. द्वारा दिए गए निर्णयों का ही समर्थक रहा है। इस सत्र के प्रथम वक्ता

मेजर जनरल (डॉ) अशोक कुमार द्वारा दक्षिण एशिया पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान व अंत में श्रीलंका के प्रति भारतीय विदेश नीति के प्रभाव को बताया। दूसरे मुख्य वक्ता प्रोफेसर एस.के. मिश्रा ने विदेश नीति के संदर्भ में पंचशील के द्वितीय संस्करण में मोदी जी के वक्तव्य को दोहराया जिस में सम्मान संवाद, सहयोग, शांति और समृद्धि की बात कही गई है साथ ही उन्होंने अपने कुछ संक्षिप्त शब्दों जिसमें सुरक्षा, सहयोग, संपर्क, सहानुभूति, सभ्यता और संस्कृति को जोड़ा। उन्होंने आगे बताया कि आज भारत आत्मविश्वास के साथ निर्णय लेने में सफल हुआ है और अपनी विदेश नीति के प्रति वह मुखर एवं सुदृढ़ हो रहा है। इस सत्र में विभिन्न राज्य के विश्वविद्यालयों से आये एकेडमिशियन्स, प्राध्यापकों, शोध छात्रों अन्य छात्रों द्वारा कुल 07 शोध पत्र भी पढ़े गए। रिपोर्टियर डा. पंकज कुमार वर्मा द्वारा सभी वक्ताओं के व्याख्यान की संक्षिप्त आख्या प्रस्तुत की गयी। सत्र के अंत में विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एन.पी. तिवारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

दिनांक 13 / 11 / 2022

तृतीय तकनीकी सत्र

दिनांक 13/11/2022 को डी०ए–वी कॉलेज के प्रांगण में "भारतीय विदेश नीति के 75 वर्ष : उपलब्धियां एवं सम्भावनाएं" विषय पर हो रहे दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार के दूसरे दिन प्रातः 10:00 में दो तकनीकी सत्रों का शुभारंभ क्रमशः भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान विभाग के स्मार्ट क्लास में, प्रारम्भ हुआ। तृतीय तकनीकी सत्र की मुख्य अतिथि एवं अध्यक्षा एंबेसडर (श्रीमती) मंजू सेठ, मुख्य वक्ता प्रोफेसर पंकज झा उपस्थित थे। सत्र का प्रारम्भ डा० वी. के. दुबे द्वारा अतिथियों का स्वागत उद्‌बोधन द्वारा किया गया। एंबेसडर सेठ द्वारा भारत की विदेश नीति की चुनौतियों पर केंद्रित होते हुये बताया कि भारत के पिछले 75 वर्षों की विदेश नीति में काफी परिवर्तन हुये है परन्तु तत्कालीन निर्णयों के लिए वर्तमान में मूल्यांकन करना ठीक नहीं है। प्रो० पंकज झा द्वारा विदेश नीति की चुनौतियों के अन्य पहलुओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया, इस तकनीकी सत्र में विभिन्न राज्यों से आये प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये, इस सत्र में कुल 08 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। रिपोर्टियर के रूप में प्राचार्य प्रो. अभय कुमार श्रीवास्तव जी ने सभी वक्ताओं की संक्षिप्त आख्या प्रस्तुत की।

चतुर्थ तकनीकी सत्र

चतुर्थ सत्र रसायन विज्ञान की स्मार्ट क्लास में संचालित किया गया जिसके मुख्य अतिथि एंबेसडर ए. के. मुदगल मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. आशुतोष सक्सेना उपस्थित रहे। सत्र की शुरुआत मंच संचालक डॉ. दिवाकर पटेल द्वारा अतिथियों के स्वागत उद्‌बोधन द्वारा किया

गया। मुख्य अतिथि एवं सत्र के अध्यक्ष एंबेसडर मुदगल द्वारा भारत की विदेश नीति का बदलते वैश्विक परिदृश्य में अपने विचारों से अवगत कराया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. सक्सेना ने बताया कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की विदेश नीति की स्थिति सुदृढ़ हो रही है। आज भारत मुखर हो रहा है। नीतियों के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है तथा वैश्विक समुदाय भारत द्वारा अपनायी जाने वाली नीतियों का सर्मथन कर रहा है। इस सत्र में विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये प्रतिभागियों ने 08 शोध पत्र प्रस्तुत किये।

समापन सत्र

डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर के सभागर में हो रही दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन सत्र 12:00 बजे प्रारम्भ हुआ। इस सत्र के मुख्य अतिथि माननीय विधान सभा अध्यक्ष श्री सतीश महाना जी, सत्र की अध्यक्षा एवं बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट की सचिव आदरणीया श्रीमती कुमकुम स्वरूप जी, समापन उद्‌बोधन हेतु एंबेसडर ए. के. मुदगल, विशिष्ट अतिथि के रूप में एंबेसडर (श्रीमती) मंजू सेठ, संगोष्ठी समन्वयक व प्राचार्य प्रो. अरुण कुमार दीक्षित व आयोजन सचिव प्रो. संध्या सिंह मंचासीन हुये। मंच संचालन डॉ. दिवाकर पटेल द्वारा माननीयों का स्वागत उद्‌बोधन द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि माननीय श्री सतीश महाना जी द्वारा भारत की विदेश नीति को वसुधैव कुटुंबकम् पर आधारित बताते हुए बताया कि वर्तमान भारत की सफल विदेश नीति के कारण आज विश्व समुदाय हमारी बातो को ध्यान से सुनता और अनुपालन करता है जबकि पहले ऐसा नही होता था। उन्होंने यह भी बताया कि मोदी जी के कार्यकाल में दुनिया के तमाम देशों के साथ भारत के बेहतर संबंध बने जो देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे। अंत में उन्होंने औद्योगिक विकास पर भी महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए संगोष्ठी आयोजन समिति को धन्यवाद और शुभकामनाएं दी। आदरणीया श्रीमती कुमकुम स्वरूप जी द्वारा इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन को सराहते हुये डी.ए–वी कॉलेज परिवार को बधाइयाँ एवं अपना आशीर्वाद प्रदान किया। समापन सम्बोधन में एंबेसडर ए.के. मुदगल द्वारा भारत की विदेश नीति के समक्ष आने वाली चुनौतियों को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि एंबेसडर श्रीमती मंजू सेठ द्वारा विदेश नीति के विकास क्रम में आने वाली चुनौतियां व इसके समाधान के उपयों को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया , आयोजन सचिव प्रो. संध्या सिंह ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की विस्तृत आख्या प्रस्तुत की। अंत में कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अरुण कुमार दीक्षित द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करते हुये अध्यक्ष जी के अनुमति से इस संगोष्ठी का समापन किया गया।

उपरोक्त तथ्यों एवं विद्वानों के विचार से यह स्पष्ट है कि 75 वर्षों के दौरान भारत ने अपने विदेश नीति में आमूल चूल परिवर्तन किया हैं गुटनिरपेक्षता की नीति भारत की विदेश नीति का एक अहम हिस्सा रहा है जो वर्तमान में भी प्रासांगिक हैं जो न केवल दो गुटों में शामिल होने से बचाता है बल्कि विश्व के समस्त देशों के साथ समान व्यवहार कारने का मार्ग प्रशस्त करता है उक्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय विदेश नीति विश्व में शांति एवं सद्भाव बनाये रखने वाली सम्पूर्ण नीतियों पर विश्वास करती है।